RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2015-17

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य मर्यादा
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्षः 45, अंक : 20   एक प्रति 2 : रुपये
कुल पृष्ठ : 8
रविवार 18 अगस्त, 2019
विक्रमी सम्वत् 2076, सृष्टि सम्वत् 1960853120
दयानन्दाब्द : 195   वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये
दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–45, अंक : 20, 15-18 अगस्त 2019 तदनुसार 2 भाद्रपद, सम्वत् 2076 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

दाता को भगवान् देता है

ले०–स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

इन्द्रो यज्वने गृणते च शिक्षत उपेद्ददाति न स्वं मुषायति।
भूयोभूयो रयिमिदस्य वर्धयन्नभिन्ने खिल्ये नि दधाति देवयुम्।।
–अथर्व० ४।२१।२

शब्दार्थ–इन्द्रः = भगवान् **यज्वने** = यज्ञ करने वाले को **गृणते** = उपदेश करने वाले को **च** = और **शिक्षते** = शिक्षा देने वाले को **उप** = समीप होकर **स्वम्** = धन **ददाति इत्** = देता ही है। **न+मुषायति** = छिपाता नहीं। **भूयः+भूयः** = बार-बार **अस्य** = इसके **रयिम्** = धन को **वर्धयन्+इत्** = बढ़ाता हुआ ही **देवयुम्** = ईश्वराभिलाषी को, भगवद्भक्त को **अभिन्ने** = अखण्ड **खिल्ये** = खिल्य में, स्थिति में, **निदधाति** = नितरां धारण करता है।

व्याख्या–दान का वैदिक धर्म में बड़ा मान है। दान देने की प्रेरणा करते हुए ऋग्वेद में कहा गया है–**'पृणीयादिन्नाधमानाय तव्यान्द्राघीयांसमनुपश्येत पन्थाम्' [ऋ० १०।११७।५]** = धनवान् मनुष्य याचक को प्रसन्न ही करे, दे, उस लम्बे मार्ग को देखे। संसार का मार्ग बहुत लम्बा है, अर्थात् जीवन-यात्रा बड़ी लम्बी है, वह सारी हमारी दृष्टि के आगे नहीं है। जाने किस समय क्या सामने आ जाए? दान देना मानो संसार-यात्रा के लिए पाथेय [तोषा] संग्रह करना है, क्योंकि–**'इन्द्रो यज्वने गृणते च शिक्षत उपेद् ददाति'**= भगवान् याज्ञिक, उपदेशक और शिक्षक को तो देता ही है।

जिसने लोकोपकार में जीवन लगा रखा है, जो लोगों को उपदेश द्वारा सुमार्ग पर लाता रहता है और जो लोगों को उत्तम शिक्षा देता है, उसे यदि भगवान् न देंगे तो और किसको देंगे? भगवान् उस पर सब-कुछ प्रकट कर देता है–**'न स्वं मुषायति'** = न धन छिपाता है और न अपना-आपा छिपाता है। भगवान् निरन्तर यज्ञ कर रहा है, निरन्तर शिक्षा और उपदेश दे रहा है। उसका जो अनुकरण करता है, मानो वह उसके कार्य में सहयोग देता है। सहयोगी से प्रभु कुछ नहीं छिपाता। धन क्या उस पर अपना 'अपनापन' भी प्रकट कर देता है, उस धन को कभी घटने नहीं देता, वरन्–**'भूयोभूयो रयिमिदस्य वर्धयन्'** = बार-बार इसके धन को बढ़ाता है और–**'अभिन्ने खिल्ये नि दधाति देवयुम्'** = भगवद्भक्त को अखण्ड खजाने पर बिठा देता है! तभी तो ऐसे भक्तों के धन के सम्बन्ध में कहा है–

न ता नशन्ति न दभाति तस्करो नासामामित्रो व्यथिरादधर्षति।
देवाँश्च याभिर्यजते ददाति च ज्योगित्ताभिः सचते गोपतिः सह।।
–अथर्व० ४।२१।३

गोपति जिन पदार्थों से देवयज्ञ करता है या जो पदार्थ दान में देता है, उनके साथ वह संयुक्त ही रहता है, क्योंकि न तो वे नष्ट होते हैं, न उन्हें चोर चुराता है और न ही दुःखदायी शत्रु दबाता है। सचमुच धन वही है जो दूसरों की तृप्ति का साधन बन सके। दान, यज्ञ से ही वह दूसरों की प्रीति का साधन बन सकता है। **(स्वाध्याय संदोह से साभार)**

अग्निमिन्धानो मनसा धियं सचेत मर्त्यः।
अग्निमिन्धे विवस्वभिः।।
–पू० १.१.२.९

भावार्थ–मनुष्य का नाम मर्त्य अर्थात् मरणधर्मा है। यदि यह मृत्यु से बचना चाहे तो जगत्पिता की उपासना करे।

सबको योग्य है कि दो घण्टा रात्रि रहते उठकर प्रभु का ध्यान करें। प्रातः काल सूर्य के निकले कभी सोवें नहीं। प्रभु की भक्ति करें तो लोगों को दिखलाने के लिए दम्भ से नहीं, किन्तु श्रद्धा और प्रेम से ध्यान करते-करते परमात्मा के ज्ञान द्वारा मोक्ष को प्राप्त होकर मृत्यु से तर जावें।

अग्ने मृड महाँ अस्यय आ देवयुं जनम्।
इयेथ बर्हिरासदम्।।
–पू० १.१.३.३

भावार्थ–हे परम पूजनीय परमात्मन्! आप श्रद्धा भक्ति युक्त पुरुषों को सदा सुखी और प्राप्त होते हो। श्रद्धा भक्ति और सत्कर्म हीन नास्तिक और दुराचारियों को तो न आपकी प्राप्ति हो सकती है, न वे सुखी हो सकते हैं। इसलिए हम सब को योग्य है कि, आपकी वेदाज्ञा के अनुसार यज्ञ, होम, तप, स्वाध्याय और श्रद्धा, भक्ति, नम्रता और प्रेम से आपकी उपासना में लग जाएँ जिस से हमारा कल्याण हो।

अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्।
अपां रेतांसि जिन्वति।।
–पू० १.१.३.७

भावार्थ–आप परम पिताजी सबसे ऊँचे, सबसे श्रेष्ठ प्रकाशस्वरूप, सबके कर्मों के साक्षी और फलप्रदाता हैं। ऐसे आप जगत्पिता प्रभु को सदा अति समीपवर्ती जान, हम सबको पापों से रहित होना, सदाचार और आपकी भक्ति में सदा तत्पर रहना चाहिये।

तं त्वा गोपवनो गिरा जनिष्ठदग्ने अङ्गिरः।
स पावक श्रुधी हवम्।।
–पू० १.१.३.९

भावार्थ–मनुष्य की वाणी, संसार के अनेक पदार्थों के वर्णन और कठोर, कटु, मिथ्या भाषणादिकों से अपवित्र हो जाती है। परमात्मा पतितपावन हैं, जो पुरुष उनके ओंकारादि सर्वोत्तम पवित्र नामों का वाणी से उच्चारण और मन से चिन्तन करते हैं, वे अपने वाणी और मन को पवित्र करते हुए आप पवित्र होकर, दूसरे सत्संगियों को भी पवित्र करते हैं। धन्य हैं ऐसे सत्यपुरुष जो आप भक्त बनकर दूसरों को भी भक्त बनाते हैं, वास्तव में उनका ही जन्म सफल है।

वेद एवं पर्यावरण

ले.-शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

तैत्तिरीयोपनिषद ब्रह्मानन्द वल्ली अनुवाक प्रथम में सृष्टि की उत्पत्ति का क्रम इस प्रकार बताया गया है, 'तस्माद्वा एतस्मादात्मन् आकाश: सम्भूत:। आकाशद्वायु:। वायोरग्नि:। अग्नेराप:। अद्भ्य: पृथिवी। पृथ्व्या ओषधय:। ओषधीभ्योऽन्नम्। अन्नाद् रेत:। रेतस: पुरूष। स वा ष पुरूषोऽन्नरसमय:। अर्थात् उस परमात्मा से आकाश उत्पन्न हुआ, आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल, जल से पृथिवी, पृथ्वी से अन्नादि औषधियां, औषधियों से वीर्य और वीर्य से पुरूष उत्पन्न हुआ इसलिए पुरूष अन्न रस मय है।'

अब पर्यावरण का अर्थ है चारों ओर से ढका हुआ। हम पृथ्वी पर रहते हैं और आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी तथा पृथ्वी पर स्थित औषधियों, पेड़ पौधों और पशु पक्षियों से घिरे हुए हैं। इनमें सन्तुलन बनाए रखना पर्यावरण शुद्धता तथा असन्तुलन बना देना पर्यावरण प्रदूषण कहलाता है। वेदों में पर्यावरण में सन्तुलन बनाए रखने से सम्बन्धित सैकड़ों मंत्र है। इस लेख में हम वेद के मंत्रों के आधार पर पर्यावरण पर चर्चा कर रहे हैं।

पर्यावरण का पहला घटक आकाश है। आकाश का अर्थ है वह रिक्त स्थान जिसमें से होकर हमारा आना और जाना होता है। आकाश ही सभी आकाशीय पिण्डों का आश्रय भी है। मनुष्य को स्वस्थ रहने के लिए खुले आकाश की अधिक आवश्यकता होती है। रात्रि में सोते समय भी उसे कम से कम 500 घन फुट आकाश चाहिए। विज्ञान के इस युग में कृत्रिम उपग्रहों के कारण तथा वायु और ध्वनि प्रदूषण के कारण आकाश भी प्रदूषित हो रहा है। ओजोन परत में छेद हो जाने से सूर्य की परा बेंगनी किरणें पृथ्वी पर पहुंच कर कई रोगों को जन्म दे रही है साथ ही साथ प्रदूषित वायु भी आकाश में पहुंच रही है।

आकाश के बाद वायु का स्थान आता है। प्रत्येक मनुष्य को प्रति दिन 13.5 कि.ग्रा. शुद्ध वायु की आवश्यकता होती है। वायु के अभाव में जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। वायु ने पृथ्वी को 800 कि.मी. ऊपर तक चारों ओर से घेरा हुआ है। वायु कई गैसों का मिश्रण है, इसमें नाइट्रोजन 79 प्रतिशत ऑक्सीजन 20 प्रतिशत शेष 1 प्रतिशत भाग में कार्बन-डाई ऑक्साइड, विरल गैसें, मिट्टी के कण और धुआं आदि है। हमारे स्वास्थ्य के लिए इन सबका एक निश्चित अनुपात में पाया जाना आवश्यक है। हम श्वास द्वारा जो हवा फेंफड़ों में लेते हैं उनमें से ऑक्सीजन रक्त में मिली हुई अशुद्धियों को जलाकर नष्ट कर देती है। फेफड़ों से शुद्ध रक्त हृदय द्वारा रक्त वाहिनियों के माध्यम से पुन: शरीर में परिभ्रमण हेतु भेज दिया जाता है। नाइट्रोजन ऑक्सीजन के जलाने की क्रिया को नियंत्रित करती रहती है। श्वास निकालते समय हवा में कार्बन डाई आक्साइड की मात्रा अधिक होने और ऑक्सीजन की मात्रा कम होने से वह पुन: श्वास लेने योग्य नहीं होती है। साथ ही आवागमन के साधनों और कल कारखानों द्वारा भी कार्बन डाई ऑक्सीजन और कई विषैली गैसें भी वायुमण्डल में मिलकर उसे प्रदूषित कर देती है। इसे शुद्ध करना आवश्यक है। पेड़ पौधे इस कार्य में सहायक होते हैं। सूर्य से प्रकाश में पेड़ पौधे वायु में से कार्बन डाई ऑक्साइड सोख लेते हैं। संश्लेषण क्रिया द्वारा क्लोरोफिल की उपस्थिति में कार्बन अपने विकास के लिए रख लेते हैं और ऑक्सीजन को निकाल देते हैं। वास्तव में ये ऑक्सीजन बनाने की फैक्टरियां हैं। हमारे शरीर में हड्डियों के निर्माण में नाइट्रोजन चक्र का बड़ा हाथ होता है। वायु का एक दूसरे दृष्टि कोण से भी हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। शरीर में रक्त वाहिनियों में बहता हुए रक्त बाहर की ओर प्रति वर्ग इंच पर 15 पौंड दबाब डालता है। वायु बाहर से अन्दर की ओर प्रत्येक वर्ग इंच पर इतना ही दबाब डाल कर इसे सन्तुलित कर हमारे शरीर को बनाए रखता है। वेदों में वायु के विषय में बहुत कुछ कह दिया गया है। निम्न ऋचा बताती है कि वायु गैसों का मिश्रण हैं और शरीर को निरोग बनाए रखता है तथा गंदगी को बहा ले जाता है।

द्वा विमौ वातौ वात आ सिन्धोरा परावत:।

दक्षं ते अन्य आ वातु परान्यो वातु यद्रप:।। ऋ. 10.137.2.

प्रत्यक्ष भूत दो हवाएं सागर पर्यन्त और सागर से दूर तक फैली हुई हैं। इनमें से एक तो शरीर को बल देती है और दूसरी अशुद्धि को बहा ले जाती है। वायु सब स्थानों में व्याप्त है एवं सभी प्राणियों का पोषक है।

त्वमिन्द्राभि भूरसि विश्ववा जातान्योजसा:।

स विश्वां भुव आभुव:।।

ऋ. 10.153.5.

यह वायु सब उत्पन्न हुए प्राणियों का अपने बल से अभि भाविता है। वह सब स्थानों पर प्राप्त होता है। वायु का पाचन क्रिया में भी बड़ा भाग होता है।

ये कीलालेन तर्पयन्ति ये घृतेन ये वा वयो मेदसा संसृजन्ति।

ये अद्भिरीशाना मरूतो वर्षयन्ति ते नो मुञ्चन्त्वंहस:।।

अथर्व. 4.27.5.

जो मरूत गण जीवन को अन्न से और जल से तृप्त करते हैं और जो चर्बी से संयुक्त करते हैं और समर्थ वायु गण से प्राणों को सींचते हैं वे हमें कष्ट से छुड़ावें।

अब हमारा कर्त्तव्य है कि हम वायु को शुद्ध करें। वायु को शुद्ध करने का सबसे अच्छा तरीका यज्ञ है। इस पर डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक संस्कार चन्द्रिका में अच्छा प्रकाश डाला है। हम उसी पर विचार करेंगे। उन्होंने लिखा है-(1) अग्नि में डाला हुआ पदार्थ नष्ट नहीं होता है। अग्नि का कार्य स्थूल पदार्थ को सूक्ष्म में बदल कर फैला देना है। हवन में डाला गया पदार्थ सूक्ष्म कणों में बदल कर अन्तरिक्ष में फैल जाता है। (2) अग्नि में डालने से पदार्थ के गुण बढ़ जाते हैं। साथ ही उनमें गुणात्मक परिवर्तन भी हो जाता है। (3) अग्नि दुर्गन्धित वस्तु को जलाकर नष्ट कर देती है और सुगन्धित वस्तु को जला कर उसकी सुगन्ध को दूर दूर तक फैला देती है। (4) हवन में कस्तूरी, केशर, गुग्गल, अगर, नगर, जायफल, जावित्री, जठामांसी आदि अनेक कीटाणु नाशक पदार्थ डाले जाते हैं। इससे आकाशस्थ रोगाणु मर जाते हैं तथा इनका धुआं मेघों के निचले भाग में धुलकर पानी को शुद्ध बना कर वर्षा भी करा देता है। पर्यावरण का अगला घटक अग्नि है जो हमें सूर्य द्वारा वैसे ही प्राप्त है। हमें धूप से बचकर नहीं रहना है। धूप में विटामिन डी अपने आप मिल जाता है। खुले में रहना सदैव लाभदायक है। पर्यावरण का अगला घटक जल है। हमारे शरीर का अधिकांश भाग जल का बना हुआ है। शुद्ध जल हमें लम्बी आयु देता है।

आपो भद्र घृतमिदाप आसन्नग्नी षोमो विभ्रत्यामइत् ता:।

तीव्रो रसो मधुपृचामरंगम आ मा प्राणेन सह वर्चसागमेत्।।

अथर्व. 3.13.5.

जल मंगलमय और जल ही घृत था। वह जल ही मधुरता से भरी जल धाराओं का परिपूर्ण मिलने वाला तीव्र रस मुझको प्राण और बल के साथ आगे ले चले।

आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे।।

ऋ. 10.9.1.

निश्चय से जल सुखदाता है। वे हमें अन्न प्रदान करें। हमारे लिए ज्ञान का साधन बनें।

आप इद्वा उ भेषजीरापो अमीवचातनी।

आप: सर्वस्य भेषजी स्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम्।। ऋ. 10.137.6.

जल निश्चय ही भेषजरूप है। जल रोग को दूर करने वाला है। जल सब प्राणियों की चिकित्सा करें। वेदों में जल की उपयोगिता बताने वाले कई मंत्र है। वहां बताया गया है कि जल ही जीवन है। जल के अभाव में रेगिस्तान के अतिरिक्त कोई अन्य कल्पना करना ही व्यर्थ है। जल भोजन बनाने में, सफाई करने में, कृषि कर्म करने में, विद्युत उत्पन्न करने, वाष्प इंजनों आदि को चलाने में काम आता है। इस विषय में निम्न मंत्र पठनीय है-

आप पृणीत भेषजं वरूथं तन्वे मम।

ज्योक्च सूर्य दृशे।।

ऋ. 10.9.7.

जलीय प्राणी सूर्य को लम्बे समय तक देखने के लिए मेरे शरीर के लिए श्रेष्ठ औषध को पूर्ण करते हैं। पर्यावरण के इस महत्वपूर्ण घटक की स्थिति अब बहुत नाजुक हो गई है। नदी के तट पर बसे महानगरों और शहरों का सम्पूर्ण मल-मूत्र नदी में डाला जा रहा है। कारखानों का विषैला तेजाब युक्त तरल पदार्थ भी नदी में प्रवाहित किया जा रहा है। मृत मानव और पशुओं के शरीर भी नदी में प्रवाहित कर दिये जाते हैं। इससे पानी पीने योग्य नहीं रह जाता है।

जल प्रदूषण को बचाने के लिए शहर का मल-मूत्र और विषैला तरल पदार्थ नदी में नहीं डालकर उसके लिए एक तालाब बना कर उसमें डाला जावे। तरल पदार्थ को संयन्त्रों द्वारा शुद्ध कर नदी में डाला जावे तथा ठोस मल पदार्थ को खाद बनाकर कृषि कर्म में उपयोग किया जावे। जलाशय में नहाते समय कुल्ला व नाक बाहर साफ करें। कपड़े भी पानी लेकर अलग से धोवें

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय

रक्षाबन्धन पर बहन बेटियों की रक्षा का संकल्प लें

रक्षाबन्धन अर्थात् रक्षा के लिए बन्धन। रक्षाबन्धन के पर्व पर हर पुरूष का कर्त्तव्य है कि बहन की रक्षा का संकल्प लेकर अपनी बहन से कलाई पर राखी बधवाएं और बहनें इस पर्व पर अपने भाई से प्रतिज्ञा कराएं कि जिस प्रकार मेरी रक्षा का संकल्प लिया है उसी प्रकार समाज की बहन-बेटियों के सम्मान पर आँच नहीं आने देंगे। रक्षाबन्धन का पर्व केवल मात्र दिखावे या औपचारिकता को निभाना नहीं है। आज समाज में बहन बेटियों के साथ हो रहे अत्याचारों से लड़ने के लिए स्वयं को तैयार करना है, जिस्म के भूखे, दरिंदे भेड़ियों से बच्चियों को बचाना है। जब तक समाज में माताएं, बहनें सुरक्षित नहीं हैं तब तक रक्षाबन्धन मनाने का कोई भी औचित्य नहीं रह जाता। हर भाई अपनी-अपनी बहनों की रक्षा के साथ-साथ दूसरों की माताओं बहनों की भी इज्जत करें।

रक्षाबन्धन का पर्व आज हमारी संस्कृति और सभ्यता का अभिन्न अंग बन गया है। यह पर्व कब शुरू हुआ, किस रूप में शुरू हुआ? और क्यों शुरू हुआ? इस बारे में कोई ऐतिहासिक तथ्य ज्ञात नहीं हैं, फिर भी आपसी स्नेह और आत्मीयता के कारण आज यह प्रमुख पर्व बन गया है जो भाई बहन के पावन स्नेह का प्रतीक हैं। विश्व के किसी भी देश में ऐसा स्नेह और भावनात्मक त्यौहार नहीं मनाया जाता है। विदेशी आक्रान्ताओं के भय से भारतीय नारियां अपने सतीत्व की रक्षा के लिए भाईयों तथा बलवान पुरूषों के हाथ में राखी बाँधकर अपनी रक्षा की कामना करती थी। इससे भाई बहन का सम्बन्ध दृढ़ होता था। भाई को रक्षा सूत्र बान्ध कर बहन संकट और विपत्ति में रक्षा पाने की अधिकारिणी समझती थी और हर वर्ष भाई को अपने उत्तरदायित्वों की आदर्श परम्परा को संस्कार देने वाला यह रक्षाबन्धन का त्यौहार आता है।

हमारी संस्कृति में सदा से पर्वों को विशेष महत्व दिया जाता रहा है। प्राचीन काल से जिस समय यह रक्षाबन्धन का पर्व शुरू भी नहीं हुआ था, तब से यह श्रावणी का पर्व मनाया जाता रहा है और आज भी श्रावणी का पर्व मनाया जाता है। इस पर्व पर नए यज्ञोपवीत धारण करने और पुराने को छोड़ने की प्रथा जुड़ी हुई है। गृह्यसूत्रों में विभिन्न प्रकार से यज्ञोपवीत के धारण करने का विधान है। गृह्यसूत्रों के आधार पर यह भी एक परिपाटी है कि प्रत्येक उत्तम यज्ञ-याग के आदि कर्मों के समय नया यज्ञोपवीत धारण किया जाए। उसी आधार की पोषिका श्रावणी पर यज्ञोपवीत बदलने की प्रथा है। यज्ञोपवीत का आर्यों के संस्कार और कर्मकाण्ड में बड़ा ही महत्व है। यज्ञोपवीत के तीन धागे गले में पड़ते ही वह पितृऋण, देवऋण और ऋषिऋण आदि कर्त्तव्यों से अपने को बन्धा हुआ समझने लगता है। इसी पर्व के अपभ्रंश के रूप में राजपूत काल में अबलाओं के अपनी रक्षार्थ सबल वीरों के हाथ में राखी बान्धने की परिपाटी का प्रचार हुआ है। जिस किसी वीर क्षत्रिय को कोई अबला राखी भेजकर अपना राखीबान्ध भाई बना लेती थी, उसकी आयुभर रक्षा करना उसका कर्त्तव्य हो जाता था। चित्तौड़ की महारानी कर्णवती ने मुगल बादशाह हुमायूँ को गुजरात के बादशाह से अपनी रक्षार्थ राखी भेजी थी, जिससे उसने चित्तौड़ पहुंचकर तत्काल अन्त समय पर उसकी सहायता की थी और चित्तौड़ का बहादुरशाह के आक्रमण से उद्धार किया था। तब से बहुत से प्रान्तों में यह प्रथा प्रचलित है कि बहनें अपने भाईयों को श्रावणी के दिन राखी बान्धती हैं और उनसे कुछ द्रव्य उपहारस्वरूप प्राप्त करती हैं।

रक्षाबन्धन का पर्व वर्तमान समय में प्रासंगिक हो गया है और एक फैशन के रूप में ज्यादा प्रसिद्ध हो गया है। प्राचीन समय में जिस रक्षा भाव के साथ राखी बान्धी जाती थी, समय परिवर्तन के साथ वो भाव समाप्त होता गया है। इसीलिए वर्तमान समय में यदि बहनें भाईयों को रक्षा सूत्र बान्ध कर संकट के समय में अपनी रक्षा के लिए दृढ़-प्रतिज्ञ बनाना चाहती हैं तो उनके भी कुछ कर्त्तव्य हैं। उन्हें अपनी मेधा से, सौम्यता से, गरिमा से अपने भाईयों को मोहित करना होगा। बहनों का व्यक्तित्व शालीन और सुसंस्कृत होना अत्यन्त आवश्यक है। नारी के सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक अधिकारों के लिए आर्य समाज हमेशा से प्रयत्नशील रहा हैं और आगे भी नारी के उत्थान के लिए कार्य करता रहेगा, परन्तु साथ ही नारी का कर्त्तव्य है कि वे अपने मधुर एवं शालीन व्यक्तित्व से देश के वातावरण को सुगन्धित बनाएं। आज समाज में जो विकृत्तियां पैदा हो रही हैं, जो कुण्ठाएं उत्पन्न हो रही हैं उन्हें दूर करने में नारियों का योगदान परम आवश्यक है। आज बहनों को आधुनिकता की इस दौड़ में अपने आपको एक आदर्श के रूप में स्थापित करना है। फैशन शो आदि अनावश्यक परेड़ में शामिल होना जीवन की उपयोगिता नहीं है, कोई सार्थकता नहीं है, कोई यथार्थता नहीं है। नारी का स्थान हमेशा ही भारतीय संस्कृति में गौरवमय है। महर्षि मनु जी लिखते हैं कि यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता, अर्थात् जहां नारी का सम्मान होता है, पूजा होती है वहां देवता निवास करते हैं। महर्षि मनु द्वारा वर्णित नारी का वह सम्मान व पूजा फैशन शो आदि के द्वारा नहीं होगी। उस महत्त्व को प्राप्त करने के लिए बहनों को लक्ष्मीबाई, दुर्गा आदि को अपना आदर्श मानना पड़ेगा। समाज को विकृत्तियों से बचाने के लिए अनावश्यक नारी के सौंदर्य को प्रदर्शित करने वाले फैशन शो और विज्ञापनों को बन्द करना चाहिए। नारी का जीवन तो बहुत ही प्रेरणादायी होता है। उनके त्याग, तपस्या से ही इस धरती को शूरवीर योद्धा, महान् धार्मिक विभूतियां और देशभक्त मिले हैं और नारी स्वयं भी आज प्रत्येक क्षेत्र में अग्रणी हैं। नारी का जीवन बहुत ही आदर्श और प्रेरणादायक होना चाहिए। शास्त्रकार कहते हैं कि-माता निर्माता भवति अर्थात् माँ को परमात्मा ने निर्माण करने की शक्ति प्रदान की है, और वह निर्माण तभी कर सकती है जिसका स्वयं का जीवन त्याग, तपस्या से परिपूर्ण होगा।

रक्षाबन्धन का पर्व जहां पर भाई-बहनों के प्यार और स्नेह का पर्व है वहीं पर हमें यह भी याद दिलाता है कि आज हमारा समाज किस दिशा में जा रहा है, समाज में किस विकृत मानसिकता के लोग तैयार हो रहे हैं, छोटी-छोटी बच्चियों के साथ बलात्कार जैसे जघन्य अपराध हो रहे हैं। इन विकृत मानसिकता के लोगों से अपनी बहन-बेटियों को किस प्रकार से बचाना है? इन सब बातों पर चिन्तन और विचार करने की आवश्यकता है। यह पर्व एक भाई के लिए रक्षा का संकल्प लेने का पर्व है। रक्षाबन्धन का पर्व आज के समय में आपसी प्रेम प्यार से ज्यादा फैशन बन गया है। आधुनिकता की इस दौड़ में रिश्तों में अपनापन समाप्त हो गया है। इसीलिए रक्षाबन्धन के पर्व पर भाईयों और बहनों को मिलकर विचार करना चाहिए कि समाज में जो बुराईयां फैल रही हैं उनका मूल कारण क्या है। क्यों आज बहन-बेटियां सुरक्षित नहीं हैं? ऐसी विकृत मानसिकता के शिकार लोगों से समाज को किस प्रकार बचाना है? इसलिए रक्षाबन्धन के त्यौहार पर भाई केवल औरचारिकता के लिए अपनी कलाई पर राखी न बंधवाएं अपितु राष्ट्र रक्षा की भावना का संकल्प लेकर इस पर्व को मनाएं। अगर इस भाव से रक्षाबन्धन का पर्व मनाया जाएगा तो समाज में रिश्तों को एक नई परिभाषा मिलेगी और रिश्तों में जो अपनापन, स्नेह, मिठास और आत्मीयता समाप्त हो गई है, वो भी पुनः लौट आएगी।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

यज्ञ से पूर्व शुद्धि

ले.-पं. वेदप्रकाश शास्त्री, शास्त्री भवन, 4-E, कैलाशनगर, फाजिल्का, पंजाब

गतांक से आगे

मन मन्दिर में गाफला, झाड़ू रोज लगाया कर।
प्रेमी भरकर प्रेम से, ईश्वर के गुण गाया कर।।
सोने में तो रात गुजारी, दिन भर करता पाप रहा।
इसी तरह बरबाद तू बन्दे, करता अपने आप रहा।।
प्रातः समय उठ प्रेम से, सत्संग में तू जाया कर।
प्रेमी भर कर प्रेम से, ईश्वर के गुण गाया कर।।

सावधान करने के पश्चात् भी यदि मन मन्दिर साफ नहीं हुआ तो भी भगवान् आएंगे परन्तु उस समय की स्थिति क्या होगी? यह भी देखिए। हाथ मलते रह जाएंगे-

आए वो और झांक कर जाने लगे।

दामन पकड़ मैंने कहा-'कहां लौट कर जाने लगे ?'

कब से बाट जोहती थी, आपके शुभागन की।
आओ प्रियतम्! शोभा बढ़ाओ इस सदन की।।
दामन भटक कर चल दिए यूं कहते हुए।
बैठें कहां इस सदन में, जब ग़ैर हैं बैठे हुए।।

जब तक मन मन्दिर में छल, कपट, ईर्ष्या, द्वेष, लोभ, मोह सदृश कूड़ा कर्कट भरा हुआ है, अन्तःकरण अशुद्ध है, तमाम तरह की गन्दगी भरी हुई है, फिर भला तब तक परम देव परमात्मा कैसे आ सकते हैं। इसलिए मन मन्दिर को अच्छी प्रकार साफ करने का प्रयत्न करें। हर कोने में झांक कर देख लें, कहीं कुछ छोटी मोटी गन्दगी रह न जाए। आओ, पक्का निश्चय करके कदम आगे बढ़ाएं-

हम मन मन्दिर कर लें साफ, प्रभु जी अन्दर आएंगे।
जब मन की मैल मिटाएंगे, प्रभु जी मन को अति भाएंगे।।1।।
इस अन्तःकरण के अन्दर, प्रभु जी का है सुन्दर मन्दिर।
जब मन्दिर होवे साफ, प्रभु आसन वहीं लगाऐंगे।।2।।
साधना की नित पकड़ बुहारी, गंदगी झाड़ें हम सब सारी।
होवे कूड़ा कर्कट साफ, प्रभु जी झलक दिखाएंगे।।3।।
सदा फूल श्रद्धा के लाकर, मन-मन्दिर खूब सजा कर।
करें प्रेम से सच्चा जाप, प्रभु जी दरस दिखाएंगे।।4।।
आओ ज्ञान की जोत जगाएं, प्रभु से हम ध्यान लगाएं।
उदय हो जाएंगे भाग, जब प्रभु जी गोद बिठाएंगे।।5।।
भगत प्रभु को विनय सुनावे, मन मेरा निर्मल हो जावे।
हो जाएंगे दूर सभी संताप, नजर प्रभु जी आएंगे।।6।।

वास्तव में मन की स्थिति बड़ी विचित्र है। मन के विचार बदलते रहते हैं। कभी अच्छे विचार आते हैं और कभी बुरे। कब कौन से विचार आ जाएं-कहा नहीं जा सकता। क्योंकि-

मन लोभी मन लालची, मन राजा मन रंक।
जो यह मन प्रभु को मिले, तो प्रभु मिले निःशंक।।1।।
मन की दुविधा न मिटे, मुक्ति कहां से होय।
कौड़ी बदले नानका, जन्म चला नर खोय।।2।।
तीर्थ नहाए क्या हुआ, जो मन में मैल समाय।
मीन सदा जल में रहे, धोए बास न जाय।।3।।

मन परिवर्तनशील है। विचार बदलते रहते हैं। कभी धन-सम्पत्ति, सोना-चांदी, रूपया-पैसा, जमीन-जायदाद, मकान-दुकान आदि देख कर मन विचलित हो जाता है। प्रयत्न करता है। छल-कपट का सहारा लेता है। बल प्रयोग करता है। न मिलने पर हत्या कर देता है। ऐसी घटनाएं हम देखते रहते हैं। अतः उदाहरण की आवश्यकता नहीं।

कभी मन सद्गुणों से परिपूर्ण होता है। किसी की वस्तु मिली, वह उसे ईमानदारी से वापस कर देता है। इस प्रकार मन कभी अच्छाई की ओर जाता है और कभी बुराई की ओर।

महाराजा भर्तृहरि कभी वैराग्य की ओर आकर्षित हुए तो कभी घर-गृहस्थ में वापस आ गए। राज कार्य देखने लगे। एक बार उन्हें वैराग्य हो गया। राजमहल त्याग कर वन को प्रस्थान किया। रात्रि हो गयी। चन्द्रमा चमक रहा था। पूर्णिमा होने के कारण चांदनी पूर्णरूपेण बिखरी हुई थी। वह मस्ती में चले जा रहे थे। अचानक ही उन्हें मार्ग में कोई चमकती हुई रंगबिरंगी वस्तु दिखाई पड़ी। मन आकर्षित हुआ। उसे उठाने के लिए हाथ आगे बढ़ाया। उसे छुआ ही था कि उन्हें कुछ गीला-गीला पदार्थ लगा। ध्यान से देखा तो पता चला-यह तो पान की पीक है। कोई जाते हुए थूक गया था। वही चन्द्रमा की चांदनी में झिलमिला रही थी। यह स्थिति देख कर अनायास ही उनके मुंह से निकल गया-

तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णाः।

लालसा बूढ़ी नहीं हुई, हमीं बूढ़े हो गए।

यह है मन का विचलित होना। भर्तृहरि महाराजा थे। किसी चीज़ की कमी न थी। खजाने से ले सकते थे। दूसरी बात, उन्हें तो वैराग्य हो गया था। वैरागी को भला धन-दौलत, हीरे-जवाहरात से क्या मतलब ? परन्तु नहीं, मन नहीं माना। अतः उठा लिया। परन्तु परिणाम विपरीत रहा। तब उन्हें यथार्थता का बोध हुआ।

अब इसके विपरीत एक महात्मा जी का जीवन देखिए-

एक महात्मा जी अपनी कुटिया के बाहर बैठे हुए थे। इतने में वहां एक सेठ जी आए और महात्मा जी से बोले-"महात्मन्! मेरी इस पोटली में कुछ मुहरें हैं। इन्हें आप रख लें। मैं दो वर्ष के लिए बाहर जा रहा हूँ। वापस आने पर ले लूंगा।"

महात्मा जी बोले-"कुटिया के छप्पर में इसे रख दो।" दो वर्ष बाद सेठ जी आए और कहा-"महात्मन् मेरी वह मुहरों वाली पोटली दे दो।" महात्मा जी ने कहा-"सेठ जी, जहां रखी थी, वहीं से ले लो।" सेठ जी गए। देखा, पोटली वैसी ही सही सलामत थी।

यह है यथार्थ वैराग्य! जिसका ध्यान ही पोटली की ओर नहीं गया। इसमें क्या है क्या नहीं? उन्हें इससे क्या काम? न लेना एक, न देना दो। निरपेक्ष भाव से अपना जीवन व्यतीत कर रहे थे। तुलसीदास ने कहा था-

सन्तन को कहा सीकरी सों काम।।

यदि मन को वश में कर लिया तो सब कुछ वश में हो गया।

अतः मन को निर्मल बनाने का प्रयत्न करें। सांसारिक वस्तुओं का त्याग के साथ उपभोग करें। उनमें लिप्त न हो जाएं। आसक्ति में न फंसें। मन की कलुषता निकालने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहें-

स्वच्छ निर्मल मन-मन्दिर, जिस समय हो जाएगा।
देर फिर कुछ न लगेगी, तू प्रभु को पा जायेगा।।1।।
मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।
जीतना मन को है कठिन, जीत से सुख पायेगा।
स्वच्छ निर्मल मन-मन्दिर, जिस समय हो जायेगा।
देर फिर कुछ न लगेगी, तू प्रभु को पा जायेगा।।2।।
मन अगर है साफ सुथरा, घर में गंगा जान ले।
गंदा है मन अगर, गंगा घाट क्या कर पाएगा।
स्वच्छ निर्मल मन-मन्दिर, जिस समय हो जाएगा।
देर फिर कुछ न लगेगी, तू प्रभु को पा जायेगा।।3।।

(2) आत्मिक शुद्धि-

आत्मा भी शुद्ध पवित्र होनी चाहिए।

अतः मनु महाराज कहते हैं-

विद्यातपोभ्यां भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुद्ध्यति।।

मनु. 5/109

विद्या, तप-योगाभ्यास और धर्माचरण से जीवात्मा शुद्ध पवित्र होता है।

बुद्धि ज्ञान से शुद्ध होती है, जल मृत्तिकादि से नहीं-

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।। गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला और कुछ भी नहीं है।

विद्ययाऽमृतमश्नुते।।

यजु. 40/14

ज्ञान से ही अमृत अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति होती है।

सा विद्या या विमुक्तये।।

वस्तुतः विद्या वही है जिससे मोक्ष की प्राप्ति होती है।

जब मनुष्य को यथार्थ ज्ञान प्राप्त हो जाता है तो बुद्धि शुद्ध हो जाती है। ज्ञान किसे प्राप्त होता है ? श्री कृष्ण कहते हैं-

श्रद्धावान् लभते ज्ञानम्।।

गीता 4/39

श्रद्धावान् व्यक्ति ही ज्ञान प्राप्त करता है।

अतः हमें ऐसे विद्वानों की संगति मिले जो हम सभी को वेदज्ञान प्रदान कर कृतार्थ करें-

येन देवाः पवित्रेणात्मानं पुनते सदा।
तेन सहस्रधारेण पावमानीः पुनन्तु नः।। साम. 1302

(क्रमशः)

महर्षि दयानन्द का एक महत्त्वपूर्ण लघु ग्रन्थ 'गोकरुणानिधि'

ले.-स्व. डा. रामनाथ वेदालंकार वेदमन्दिर, ज्वालापुर (हरिद्वार)

महर्षि दयानन्द रचित पुस्तकों में एक छोटी सी पुस्तक 'गोकरुणानिधि' है। देखने में तो छोटी सी है, किन्तु महत्त्व में यह कम नहीं है। इसकी रचना स्वामी जी ने आगरा में की थी। पुस्तक के अन्त में स्वामी जी ने स्वयं लिखा है कि यह ग्रन्थ संवत् 1937 फाल्गुन कृष्णा दशमी गुरुवार के दिन बन कर पूर्ण हुआ। यह 15 दिन में ही छप कर तैयार हो गया और शीघ्र ही बिक कर समाप्त हो गया। एक वर्ष के अन्दर ही इसका द्वितीय संस्करण प्रकाशित करना पड़ा। स्वामी जी ने इसका अंग्रेजी अनुवाद भी करवाया था।

गोकरुणानिधि तीन भागों में विभक्त है। प्रथम भाग में गाय आदि पशुओं की रक्षा के विषय में समीक्षा लिखी गयी है। यह समीक्षा भी दो प्रकरणों में है। प्रथम प्रकरण में गाय आदि पशुओं की रक्षा का महत्त्व बताया गया है। दूसरे प्रकरण में हिंसक और रक्षक का संवाद है, जिसमें मांसभक्षण के पक्ष में जो भी बातें कहीं जा सकती हैं, वे सब एक-एक करके हिंसक के मुख से कहला कर रक्षक द्वारा उन सबका उत्तर दिलाया गया है। इससे अन्त में यह परिणाम निकलता है कि मांसभक्षण सर्वथा अनुचित है। यह संवाद बड़ा ही रोचक और शिक्षाप्रद है। शिक्षणालयों में एक छात्र को हिंसक तथा दूसरे को रक्षक बना कर इसका अभिनय किया जा सकता है। हिंसक और रक्षक के संवाद के बाद मद्यपान तथा भांग आदि के सेवन के दोष बताये गये हैं, क्योंकि मांसभक्षण से मद्यपान तथा भांग आदि नशीले पदार्थों के सेवन की आदत भी पड़ जाती है। पुस्तक के दूसरे भाग में गोकृष्यादिरक्षिणी सभाओं के नियम लिखे हैं तथा तीसरे भाग में उपनियम हैं।

भूमिका में ग्रन्थ का प्रयोजन बताते हुए महर्षि लिखते हैं-"यह ग्रन्थ इसी अभिप्राय से रचा गया है, जिससे गौ आदि पशु जहाँ तक सामर्थ्य हो बचायें जावें और उनके बचाने से दूध, घी और खेती के बढ़ने से सबको सुख बढ़ता है।"

गाय आदि पशुओं की रक्षा क्यों आवश्यक है यह समझाने के लिए महर्षि हिसाब लगाकर बताते हैं कि एक गाय की पीढ़ी रक्षा करने पर कितना लाभ पहुँचा सकती है, जबकि उसे काट कर उसका मांस खाने से उसकी तुलना में कुछ भी उपकार नहीं होता। वे लिखते हैं-

"जो एक गाय न्यून से न्यून दो सेर दूध देती हो और दूसरी बीस सेर, तो (औसत से) प्रत्येक गाय के ग्यारह सेर दूध होने में कोई शंका नहीं। इस हिसाब से एक मास में सवा आठ मन दूध होता है। एक गाय कम से कम 6 महीने और दूसरी अधिक से अधिक 18 महीने तक दूध देती है तो दोनों का मध्य भाग प्रत्येक गाय के दूध देने में 12 महीने होते हैं। इस हिसाब से 12 महीनों का दूध 99 मन होता है।"

"इतने दूध को औटाकर प्रति सेर में छटांक चावल और डेढ़ छटांक चीनी डाल कर खीर बना खावे, तो प्रत्येक पुरुष के लिए दो सेर दूध की खीर पुष्कल होती है, क्योंकि यह भी एक मध्यमान की गिनती है, अर्थात् कोई दो सेर दूध की खीर से अधिक खाएगा और कोई न्यून। इस हिसाब से एक प्रसूता गाय के दूध से एक हजार नौ सौ अस्सी मनुष्य एक बार तृप्त होते हैं। गाय न्यून से न्यून 8 और अधिक से अधिक 18 बार ब्याहती है, इसका मध्यभाग 13 आया। तो पच्चीस हजार सात सौ चालीस मनुष्य एक गाय के जन्मभर के दूध मात्र से एक बार तृप्त हो सकते हैं।"

"इस गाय की एक पीढ़ी में छः बछिया और सात बछड़े हुए। इनमें से एक की मृत्यु रोगादि से होना संभव है, तो भी बारह रहे। उन छः बछियाओं के दूध मात्र से उक्त प्रकार एक लाख चौवन हजार चार सौ चालीस मनुष्यों का पालन हो सकता है। अब रहे छः बैल। उनमें एक जोड़ी से दोनों साख में दो सौ मन अन्न उत्पन्न हो सकता है। इस प्रकार तीन जोड़ी 600 मन अन्न उत्पन्न कर सकती हैं। और उनके कार्य का मध्यभाग आठ वर्ष है। इस हिसाब से चार हजार आठ सौ मन अन्न उत्पन्न करने की शक्ति एक जन्म में तीनों जोड़ी की है।"

"4800 मन अन्न से प्रत्येक मनुष्य का तीन पाव अन्न भोजन में गिने, तो दो लाख छप्पन हजार मनुष्यों का एक बार भोजन होता है। दूध और अन्न को मिला कर देखने से निश्चय है कि चार लाख दस हजार चार सौ चालीस मनुष्यों का पालन एक बार के भोजन से होता है। अब छः गाय की पीढ़ी पर-पीढ़ियों का हिसाब लगा कर देखा जावे तो असंख्य मनुष्यों का पालन हो सकता है। और इसके मांस से अनुमान है कि केवल 80 मांसाहारी मनुष्य एक बार तृप्त हो सकते हैं। देखो, तुच्छ लाभ के लिए लाखों प्राणियों को मार असंख्य मनुष्यों की हानि करना महापाप क्यों नहीं?"

इस प्रकार बकरी के लिए भी हिसाब लगा कर दिखाया है परन्तु महर्षि केवल गाय और बकरियों की ही रक्षार्थ सचेष्ट नहीं थे, प्रत्युत सभी उपयोगी पशुओं की रक्षा आवश्यक समझते थे, और किसी भी पशु का मांस खाने के सर्वथा विरुद्ध थे।

गाय आदि पशुओं की रक्षा के लिए महर्षि दयानन्द की आतुरता उनकी निम्नलिखित पंक्तियों से प्रकट हो रही है-"गौआदि पशुओं के नाश होने से राजा और प्रजा का ही नाश होता है क्योंकि जब पशु न्यून होते हैं, तब दूध आदि पदार्थ और खेती आदि कार्यों की घटती होती है। देखो, इसी से जितने मूल्य से जितना दूध और घी आदि पदार्थ तथा बैल आदि पशु सात सौ वर्ष पूर्व मिलते थे, उतना घी दूध और बैल आदि पशु इस समय दशगुणे मूल्य से भी नहीं मिल सकते।"

"हे मांसाहारियों! तुम लोगों को जब कुछ काल पश्चात पशु न मिलेंगे तब मनुष्यों का मांस भी छोड़ोगे या नहीं? हे परमेश्वर तू क्यों इन पशुओं पर जो कि बिना अपराध मारे जाते हैं, दया नहीं करता? क्या उन पर तेरी प्रीति नहीं है? क्या इसके लिए तेरी न्यायसभा बन्द हो गई है?"

दयामय दयानन्द ने गाय आदि पशुओं की हत्या रुकवाने के लिए देशव्यापी हस्ताक्षर-अभियान चलाया था। उनका प्रयत्न था कि गौ हत्या रोकने विषयक प्रार्थनापत्र पर दो करोड़ भारतवासियों के हस्ताक्षर करवा कर ब्रिटिशसम्राज्ञी विक्टोरिया को वह प्रार्थनापत्र भेजा जाये। इसके लिए उन्होंने राजा से रंक तक सभी को प्रेरित किया था। इस प्रार्थनापत्र पर उदयपुर के महाराजा श्री सज्जन सिंह, जोधपुर के महाराजा यशबन्तसिंह, शाहपुराधीश, नाहरसिंह, महाराजा बूंदी आदि ने भी हस्ताक्षर किये थे तथा अपनी प्रजा से भी कराये थे। महर्षि के असामयिक देहावसान के कारण यह कार्य बीच में ही रुक गया।

स्वामी दयानन्द गोकृष्यादिर-क्षिणी सभा की स्थापना करना चाहते थे। इसे वे विश्वव्यापी बनाना चाहते थे। सब विश्व को विविध सुख पहुँचाना इस सभा का मुख्य उद्देश्य नियमों में वर्णित किया गया है तथा लिखा है कि जो मनुष्य इस परमहितकारी कार्य में तन-मन-धन से प्रयास और सहायता करेगा, वह इस सभा के प्रतिष्ठायोग्य होगा। यह भी लिखा है कि क्योंकि यह कार्य सर्वहितकारी है, इसलिए यह सभा भूगोलस्थ मनुष्यजाति से सहायता की पूरी आशा रखती है। जो सभा देशदेशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर में परोपकार ही करना अभीष्ट रखती है, वह सभा की सहकारिणी समझी जायेगी। महर्षि के 12 जनवरी सन् 1882 ई. के पत्र से ज्ञात होता है कि उन्होंने आगरा में एक "गो-रक्षिणी सभा" स्थापित की थी और उसके नियमोपनियम भी बनाये थे। संभवतः वे ही नियमोपनियम गोकरुणानिधि में उन्होंने छपवाये होंगे।

गोकृष्यादिरक्षिणी सभा के नियमों में लिखा है कि जो सभा के उद्देश्य के अनुकूल आचरण करने को उद्यत हो तथा जिसकी आयु 18 वर्ष से न्यून न हो वह इस सभा में प्रविष्ट हो सकता है। जो इस सभा में सदाचारपूर्वक एक वर्ष रह चुका हो और अपनी आय का शतांश या अधिक देता रहा हो, वह 'गौ रक्षक सभासद्' हो जायेगा और उसे सम्मति देने का अधिकार प्राप्त हो जायेगा। वर्ष भर सभा में रहने के नियम को विशेष परिस्थितियों में अन्तरंग सभा शिथिल भी कर सकती है। राजा, सरदार, बड़े-बड़े साहूकार आदि को सभा के सभासद् बनने के लिए शतांश देना आवश्यक नहीं होगा। वे एक बार या मासिक या वार्षिक अपने उत्साह वा सामर्थ्य के अनुसार देकर सभासद् बन सकते हैं। अन्तरंग सभा किसी विशेष हेतु से चन्दा न देने वाले को भी गौ

(शेष पृष्ठ 7 पर)

"स्वामी जी के हरिद्वार के कुम्भ मेले पर पाखण्ड खण्डिनी पताका लहराने का संक्षिप्त वर्णन

ले.-पं. खुशहाल चन्द्र आर्य C/o गोबिन्द राय आर्य एण्ड सन्ज १८० महात्मा गान्धी रोड़, (दो तल्ला) कोलकत्ता-700007

मेरठ से प्रस्थान कर स्वामी दयानन्द फाल्गुन सुदी सप्तमी सम्वत् 1923 (12 मार्च 1867) को हरिद्वार पहुँचे। वहाँ भीम गोड़े के ऊपर सप्त सरोवर स्थित एक बड़ा बाँध है। वहीं पर उन्होंने अपनी पर्णकुटी बनाकर उसे अपना आवास स्थान बनाया। उसी पर्णकुटी पर स्वामी जी ने अपनी पाखण्ड खण्डिनी पताका फहरा दी। स्वामी जी के साथ 15-16 ब्राह्मण सन्यासी और भी थे। उन सब के लिए भी वही पर्ण कुटियाँ बनाई गई।

हरिद्वार एक ऐसी नगरी है, जिसके चतुर्दिक प्राकृतिक सुषमा और सौन्दर्य व्याप्त है। यहाँ गंगा की अठखेलियाँ करती हुई निर्मल जलधारा आगन्तुक का मन मोहे बिना नहीं रहती। यहाँ का जलवायु भी ऐसा है कि वह प्राणों में एक नव चेतना का संचार कर देती है और जहाँ तक गंगा जल का सम्बन्ध है उसकी विशुद्धता तो अनेक वैज्ञानिकों ने भी मुक्तकण्ठ से प्रशंसा बखानी है। गंगा के निर्मल जल में किसी भी रोग के कीटाणु नहीं पनप पाते। ज्यों ही वे जल में पड़ते है, तत्काल निष्प्राण हो जाते हैं।

आर्य राष्ट्र के वैज्ञानिकों, साहित्यकारों, मनीषियों, तपस्वियों एवं साधकों सभी के लिए हरिद्वार और गंगातट आकर्षण का केन्द्र रहा है। हरिद्वार के आस-पास फैली पर्वत मालायें और सघन वन अनेकों ऋषि-मुनियों और साधु-सन्तों की साधना स्थली रही है। अनेकों कवियों की काव्य प्रतिभा को इस प्राकृतिक सम्पदा से सुसम्पन्न आंचल ने अपनी कविताओं की रचना हेतु प्रेरणा प्रदान की है।

सुदूर अतीत में हरिद्वार नगरी युगों-युगों तक सन्तों और ऋषियों का पावनधाम रही और उनके श्री चरणों में बैठ कर जिज्ञासु जन-जीवन का वास्तविक उद्देश्य जानते रहे हैं। किन्तु काल के प्रवाह ने स्थिति को सर्वथा बदल दिया और सातवीं सदी में जब चीनी यात्री ह्वेनसांग हरिद्वार आया तो उसने यहाँ लम्पटों और धूर्तों की मण्डलियों को पाया, जो धर्म के नाम पर दुर्नीतियों और अधर्म के प्रचार और प्रसार में तल्लीन थे।

उन दिनों में यह मिथ्या धारणा लोगों के मानसपटल पर अंकित कर दी गई कि हरिद्वार में गंगा की लहरों में डुबकी लगाने मात्र से ही मोक्ष का द्वार खुल जाता है। जब महर्षि दयानन्द कुम्भ पर्व पर हरिद्वार पहुँचे थे, तब तो स्थिति पूर्व की अपेक्षा और अधिक भयावह रूप धारण कर चुकी थी। अतएव उन्होंने पौराणिकों का गढ़ बन कर रह गयी इस नगरी में वेद के वास्तविक सन्देश के पुन: प्रचार और प्रसार का कार्य आरम्भ किया। पर्णकुटी पर फहराती ओ३म् की स्वर्णपताका एक प्रकार से उस दिग्विजय का प्रतीक थी जिसके लिए देव दयानन्द ने आसेतु हिमाचल समग्र भारत भूमि को जगाने का व्रत निभाया था। हरिद्वार में स्वामी जी ने धर्म के नाम पर पनप रहे पाखण्ड पर प्रबल प्रहार का क्रम कुम्भ के इस पर्व के अवसर पर ही आरम्भ किया।

स्वामी जी की कुटिया पर फहराती अनुपम पताका देखकर सैकड़ों जिज्ञासु जन वहाँ स्वयं ही चले आते थे और उनमें से अनेक स्वामी जी द्वारा प्रदर्शित सत्यज्ञान के आलोक से अपने हृदय में व्याप्त अन्धकार को दूर कर प्रकाश की ऐसी किरण लेकर लौटते थे जो जीवन भर उनका मार्ग दर्शन करती रहेगी।

लाखों श्रद्धालु भक्तों से भरे इस विशाल कुम्भ में चतुर्दिक देव दयानन्द की चर्चा सुनाई पड़ने लगी थी। इससे पूर्व किसी ने किसी सन्यासी के श्री मुख से श्राद्धों की निस्सारता मूर्त्तिपूजा का खण्डन, अवतारवाद की असंगतता, पुराणों और उप-पुराणों का मिथ्यात्व न सुना था। अत: अनेक लोग तो महर्षि के दर्शन करके ही विस्मित हो जाते थे। इनमें से अनेक धर्म भीरू जन अपने मस्तिष्क पर पड़े गलत संस्कारों के वशीभूत, यह भी कह उठते थे कि "देखो! कैसा कलिकाल आ गया है कि सन्यासी भी नास्तिकता का प्रसार कर रहा है।

अनेक धर्मान्धों ने तो स्वामी जी को नास्तिक कहने में भी संकोच न किया। अपने आप को पण्डित और ब्राह्मण होने का दम भरने वाले अनेकों ने तो महर्षि के विरूद्ध अपशब्द कहने में भी लज्जा अनुभव न की। किन्तु उनमें से जो भी स्वामी जी से शास्त्रार्थ करने का साहस संजोकर उनके समक्ष पहुँचते, वे निरूत्तर हो कर लौटते थे।

उस समय के काशी के सुप्रसिद्ध विद्वान् पं. विशुद्धानन्द ने एक दिन...

"ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्य: कृत:।
उरू तदस्य यद्वैश्य: पद्भ्या शूद्रोअजायत।।"

इस मन्त्र का अर्थ बताते हुए कहा कि ब्राह्मण, ब्रह्मा के मुख से, क्षत्रिय भुजा से, वैश्य उरू से और शूद्र पैरों से उत्पन्न हुए है।

स्वामी जी ने तुरन्त ही विशुद्धानन्द जी को यजुर्वेद के मन्त्र की गलत व्याख्या पर आड़े हाथों लिया और श्रोताओं को बताया कि चारों वर्णों में ब्राह्मण मुख है यानि मुख के समान है और क्षत्रिय, भुजा, वैश्य उरू और शूद्र पैर के समान है।

कुम्भ मेले पर ही पं. विशुद्धानन्द एवं वल्लभ सम्प्रदाय के गुसाइयों में विवाद उठ खड़ा हुआ। गुसाइयों ने स्वामी जी से सहायता की याचना की। स्वामी जी ने कहा कि मैं तो वेदों का अनुयायी हूँ, अत: आप दोनों में से किसी का पक्ष नहीं ले सकता। मैं तो केवल सत्य के प्रचार के लिए संकल्प बद्ध हूँ।

दादूपंथियों के प्रमुख नेता स्वामी महानन्द भी कुम्भ मेले पर हरिद्वार में ही थे। वह थे तो विद्वान् किन्तु उन्होंने वेदों का प्रथम बार दर्शन महर्षि दयानन्द के पास ही किया। स्वामी जी की शिक्षाओं का सुप्रभाव यह हुआ कि महानन्द दादू पंथी से वेद पंथ के पथिक बन गये। तदुपरान्त उन्होंने वेद की शिक्षाओं के प्रचार व प्रसार को ही अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया। आर्य समाज मन्दिर देहरादून के भवन में उन्हीं स्वामी महानन्द के नाम पर महानन्द पुस्तकालय स्थापित किया गया।

वस्तुत: हरिद्वार के इस कुम्भ मेले में ही स्वामी दयानन्द ने यह अनुभव किया कि आज विश्व में अज्ञान पराकाष्ठा पर पहुँच चुका है। उन्होंने इस तथ्य को भी भली भाँति देखा कि जो लोग संस्कृतज्ञ हैं उनमें से अधिकतर स्वार्थ के वशीभूत होकर धर्म के नाम पर सामान्य जनों को ठग रहे हैं। ये लोग जनता में धर्म के नाम पर अधर्म का प्रचार कर रहे हैं। उन्होंने यह भी देखा कि विभिन्न मतों और पंथों के कटघरों में कैद हुए साधुओं का जीवन तो गृहस्थों से भी बुरा होकर रह गया है और सम्भवत: ऐसी कोई बुराई नहीं जो साधु समाज में व्याप्त न हो गई हो।

इस दुखावस्था से क्षुब्ध होकर महर्षि ने संकल्प किया कि वह अपना शेष जीवन समाज में धर्म के नाम पर पनप रहे अधर्म और कुरीतियों के उन्मूलन में लगा कर वेदों के स्वाध्याय से अर्जित ज्ञान को जन-जन में प्रचारित और प्रसारित करेंगे।

कुम्भ के इस विशाल मेले में स्वामी जी ने अनेक शास्त्रार्थ किए। अनेकों प्रतिवादियों को निरूत्तर कर विजय प्राप्त की। सैकड़ों जिज्ञासुओं की जिज्ञासा का शमन किया और भागवत के खण्डन में अनेकों पुस्तकें वितरित की। पाखण्ड खण्डिनी पताका और स्वामी जी के उपदेशों ने सहस्त्रों व्यक्तियों की जीवन धारा ही पलट दी। यह लेख मैंने आदरणीया बहन राकेश रानी की पत्रिका जन ज्ञान के अक्तू, नव, दिस. 2018 के मास 1 से लिया है जो अति प्रेरणादायक समझ कर लिया है। आशा है सुधीगण इससे लाभ उठाएगें।

वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज मोहल्ला गोबिन्दगढ़ जालन्धर का वेद प्रचार सप्ताह 19 अगस्त सोमवार से 25 अगस्त 2019 रविवार तक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य समाज के पुरोहित श्री पं. सुन्दर लाल शास्त्री जी के प्रवचन तथा श्री राजेश अमर प्रेमी जी के मधुर भजन होंगे। आप सभी सपरिवार इष्टमित्रों सहित पधार कर धर्मलाभ प्राप्त करें।

-सुमित महाजन मन्त्री आर्य समाज

वेद प्रचार पखवाड़ा का आयोजन

आर्य समाज मन्दिर मॉडल टाऊन जालन्धर में वेद प्रचार पखवाड़े का आयोजन दिनांक 25 अगस्त 2019 रविवार से 8 सितम्बर 2019 रविवार तक किया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत के विद्वान आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी जी के प्रवचन तथा श्रीमती रश्मि घई तथा सरदार सुरेन्द्र सिंह गुलशन जी के भजन होंगे। इस अवसर आप सभी सपरिवार एवं इष्टमित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

-अरविन्द घई प्रधान आर्य समाज मॉडल टॉऊन

पृष्ठ 2 का शेष-वेद एवं पर्यावरण

और गंदा पानी जलाशय में न जाने दें। कुएं में समय-समय पर लाल दवा डालते रहे और पानी भी निकालते रहे। शुद्ध जल के उपयोग से हम निरोग रहेंगे और शरीर सुन्दर बनेगा।

आपो अस्माकं मातरः शुद्धयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु।

विश्वꣳहि रिप्रं प्रवहन्ति देवीरूदिदाभ्यः शुचिरापूतऽएमि।

दीक्षा तपसोस्तनूरसि तां त्वा शिवा शग्मां परिदधे भद्रं वर्णं पुष्यन्।। यजु. 4.2.

भावार्थ-मनुष्य को योग्य है कि जो सब सुखों को प्राप्त कराने, प्राणों को धारण कराने तथा माता के समान पालन का हेतु जल है उनसे सब प्रकार पवित्र होकर इनको शोध कर मनुष्यों को नित्य सेवन करना चाहिए, जिससे सुन्दर वर्ण, रोग रहित शरीर को सम्पादन कर निरन्तर प्रयत्न के साथ धर्म का अनुष्ठान कर आनन्द भोगें।

पर्यावरण का चौथा घटक ध्वनि प्रदूषण है। ध्वनि ही हमारे ज्ञानार्जन का साधन तथा विचारों का आदान प्रदान करने वाला है। सभी प्राणियों की ध्वनि में भिन्नता होने से गहन अन्धकार में भी हम पहचान जाते हैं कि कौन प्राणी बोल रहा है। विभिन्न वाद्य यन्त्रों को भी ध्वनि से ही जान लिया जाता है। ध्वनि का जीवन में महत्वपूर्ण भाग है परन्तु वर्तमान में विभिन्न कारखानों, रेलगाड़ियों, बसों, मोटरों, ट्रकों, लाउड स्पीकरों आदि की लगातार तीव्र ध्वनि हमें बहरा बनाने लगी है। हमारी नींद में बाधा डालने लगी है, सिर दर्द और तनाव हमारे साथी बनते जा रहे हैं। ध्वनि की तीव्रता को डेसिबल में नापा जाता है। 20 डेसिबल से अधिक शोर को ध्वनि प्रदूषण कहा जाता है। शहरों में सदैव 40 डेसिबल से अधिक शोर रहता है। इससे बचने के लिए हमें लाउड स्पीकर का कम से कम उपयोग करना चाहिए। रेडियो और टी.वी. की ध्वनि भी उतनी ही रखना चाहिए जितने से हम सुन सकें। सदैव धीमा बोलना चाहिए। बोलना मधुर और शान्त रहे। तेज ध्वनि का उपयोग तो शत्रु को भगाने के लिए युद्ध में नगाड़ों द्वारा करें। ऋ. 10.102 मंत्र संख्या 5 से 10 में ऐसे कृत्रिम सांड का वर्णन है जो अपनी तेज आवाज़ और विषैली गैस से शत्रु को युद्ध के मैदान से भगा देता है।

पर्यावरण का पांचवां घटक है खाद्य प्रदूषण। खाद्य पदार्थों के अभाव में जीवन ही संभव नहीं है। आज कल खाद्य पदार्थों में भी मिलावट की जा रही है। जबकि भोजन द्वारा शरीर को कार्य करने के लिए ऊर्जा प्राप्त होती है। कार्य करने से कोशिकाओं में जो टूट-फूट होती है उसकी मरम्मत होती है और नई कोशिकाओं का निर्माण भी होता है। भोजन द्वारा शरीर को ताप मिलता है और ताप पर नियंत्रण भी होता है। भोजन द्वारा ही शरीर का विकास भी होता है। अथर्ववेद काण्ड 6 सूक्त 135 तथा ऋग्वेद मण्डल 8 सूक्त 48 के मंत्रों में भोजन की उपयोगिता के विषय में पर्याप्त वर्णन है।

यत् पिबामि सं पिबामि समुद्र इव संपिबः।

प्राणानमुष्य संपाय सं पिबामो अमुं वयम्।। अथर्व. 6.135.2.

मैं जो कुछ पीता हूँ यथा विधि पीता हूँ। जैसे यथाविधि पीने वाला समुद्र पीकर पचा लेता है। पदार्थ को यथाविधि हम पीवें।

इसी प्रकार अगले मंत्र में खाने के विषय में कहा गया है।

स्वादोरभक्षि वयसः सुमेधाः स्वाध्यो वरिवो वित्तरस्य।

विश्वे यं देवा उत मर्त्यासो मधु ब्रुवन्तो अभि सञ्चरन्ति।। ऋ. 8.48.1.

मैं अन्न खाऊँ। अन्न कैसा हो? जो स्वादु हो जो सत्कार के योग्य हो जिसको देख कर ही चित्त प्रसन्न हो। जिस अन्न को साधारण तथा श्रेष्ठ व्यक्ति मधुर कहते हुए खाते हैं। हम उस अन्न को खायें। खाने वाले सुमति और बुद्धिमान हों साथ ही उद्योगी और कर्म परायण हों।

वेद में खाद्यान्न में मिलावट करने वाले को दण्ड देने का प्रावधान है।

आमे सुपक्वे शवले विपक्वे यो मा पिशाचो अशने ददम्भ।

तदात्मना प्रजया पिशाचा वियातयन्तामगदो३यमस्तु।।

अथर्व. 5.29.6.

जिस पिशाच समूह ने कच्चे-अच्छे पक्के विविध प्रकार पके हुए भोजन में मुझे धोखा दिया है। वे पिशाच अपने परिवार सहित विविध प्रकार पीड़ा पावें और यह पुरूष नीरोग रहे। पर्यावरण का छठा घटक मृदा अपमर्दन और वनस्पति क्षरण है।

प्राणी मात्र के लिए मिट्टी और वनस्पति अत्यन्त महत्वपूर्ण है। बड़े-बड़े राजमहल और सामान्य झोपड़ी भी इसी मिट्टी की माया है। विभिन्न पेड़, पौधे, शाक, झाड़ियां आदि इस मिट्टी से ही उत्पन्न होते है। बढ़ती हुई जनसंख्या और मनुष्य की महत्वाकांक्षा ने इस मिट्टी को प्रदूषित कर दिया है। विभिन्न रासायनिक खाद और फसलों के कीड़ों को मारने के लिए जो दवाईयों का छिड़काव किया जा रहा है उसने मिट्टी को विषैला बना दिया है। यह विषैली मिट्टी वर्षा के जल के साथ मिलकर जल को भी विषैला बना रही है। भवन निर्माण हेतु पत्थर पाने के लिए भूमि को बुरी तरह खोदा जा रहा है। पत्थर की खानों के पास मिट्टी और टूटे-फूटे पत्थरों के पहाड़ खड़े हो गए है। अधिक खुदाई के कारण भूकम्प आने लगे हैं।

वेद में पृथ्वी को माता माना गया है। अथर्ववेद काण्ड 12 सूक्त 1 में 64 मंत्र हैं जिनमें पृथ्वी का हृदय ग्राहि वर्णन हुआ है। बारहवें मंत्र में कहा गया है 'माता भूमि पुत्रों अहं पृथिव्या' इसी प्रकार 63वें मंत्र में कहा गया है 'भूमे मातर्नि धेहि मा भद्रया सुप्रतिष्ठितम्।' पृथ्वी को खोदे परन्तु उसे नष्ट न कर दें। औषधि भी ऐसे खोदे की उसकी जड़ नष्ट न होवे।

यत् ते भूमेविखनामि क्षिप्रम तदपि रोहतु।

मा ते मर्म विमृग्वरि मा ते हृदयमर्पिपम्। अथर्व. 12.1.35.

पर्यावरण का अगला घटक पशु-पक्षी है। वेद में इनके संरक्षण को भी बड़ा महत्व दिया गया है। यजुर्वेद का 24वां अध्याय तो इन्हें ही समर्पित है। परन्तु मनुष्यों ने उनको मार कर खाना शुरु कर रखा है। सौ से भी अधिक पक्षियों का तो नाम भी नहीं बचा है। इसका भी पर्यावरण पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है।

पृष्ठ 5 का शेष-महर्षि दयानन्द का एक महत्त्वपूर्ण...

रक्षक सभासद् बना सकती है।

उपनियमों में अंकित है कि सभा के समस्त कार्यप्रबन्ध के लिए एक अन्तरंग सभा नियत की जायेगी और उसके तीन प्रकार के सभासद होंगे एक प्रतिनिधि दूसरे प्रतिष्ठित और तीसरे अधिकारी। प्रत्येक दो सप्ताह बाद अन्तरंग सभा अवश्य हुआ करेगी और मन्त्री तथा प्रधान भी आज्ञा से या जब अन्तरंग सभा के पांच सदस्य मन्त्री को पत्र लिखें तब भी हो सकती है।

गोकृष्यादिरक्षिणी सभा का कार्य क्या होगा एतदर्थ लिखा है कि संप्रति इस सभा के धन का व्यय गौ आदि पशु लेने, उनका पालन करने, जंगल और घास के क्रय करने, उनकी रक्षा के लिए भृत्य वह अधिकारी रखने, तालाब, कूप, बावड़ी अथवा बाड़ा बनाने के निमित्त किया जायेगा। पुनः अत्युन्नत होने पर सर्वहित कार्य में भी व्यय किया जा सकेगा। यह भी निर्देश है कि इस सभा के जो पशु प्रसूत होंगे, उनका दूध एक मास तक उनके बछड़े को पिलाना चाहिए और अधिक होने पर उसी पशु को अन्न के साथ खिला देना चाहिए। दूसरे मास से तीन स्तनों का दूध बछड़े को देना चाहिए और एक स्तन का स्वयं लेना चाहिए। तीसरे मास के आरम्भ से आधा दूध लेना और आधा बछड़े को तब तक देते रहना चाहिए। जब तक गाय दूध देती है। सभा जब किसी को स्वरक्षित पशु देवें, तब यह व्यवस्था कर ले कि जब वह पशु असमर्थ हो जायेगा, उसके काम का न रहेगा, तब वह पुनः उसे सभा के अधीन कर देगा।

स्वामी दयानन्द का अभिप्राय था कि गाय-बैलों की रक्षा होगी तो घी-दूध, अन्न प्रचुर मात्रा में मिलेगा, कृषि उन्नत होगी, देशवासी बलवान् तथा बुद्धिमान बनेंगे और इस प्रकार प्रत्येक देश के समुन्नत होने पर यह धरती गरिमामयी बन सकेगी।

ग्रन्थ को समाप्त करते हुए महर्षि ने एक बड़ा ही मार्मिक श्लोक लिखा है-

धेनुः परा दया पूर्वा यस्यानन्दाद् विराजते।

आख्यायां निर्मितस्तेन ग्रन्थो गोकरुणानिधिः।।

अर्थात् जिसके नाम में आनन्द शब्द के बाद 'धेनु' विराजमान है और आनन्द शब्द से पूर्व 'दया' है, उस 'दयानन्द सरस्वती' ने यह गोकरुणानिधि नामक ग्रन्थ निर्मित किया है। सरस्वती के अनेक अर्थों में एक अर्थ धेनु (गाय) भी होता है, इस दृष्टि से आनन्द शब्द के बाद धेनु का होना लिखा है। इससे यह सूचित होता है कि मेरे नाम का ही यह अर्थ है कि 'धेनुओं पर करुणा करके आनन्द मानने वाला' अतः मेरा 'गोकरुणानिधि' ग्रन्थ लिखना स्वाभाविक ही है।

गौ-रक्षा और पशु-रक्षा का प्रश्न जैसा महर्षि दयानन्द सरस्वती के समय था, वैसा ही आज भी है और उनके द्वारा किये गये गौ आदि पशुओं की रक्षा के प्रयास आज हमें भी अपने कर्त्तव्य का बोध करा रहे हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने अनुच्छेद 370 के फैसले का किया समर्थन

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.), गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर की कार्यकारिणी की बैठक दिनांक 8 अगस्त 2019 को सभा कार्यालय में सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी की अध्यक्षता में हुई। इस अवसर पर श्री सरदारी लाल जी वरिष्ठ उप प्रधान, चौधरी ऋषिपाल सिंह एडवोकेट उप प्रधान, श्रीमती राजेश शर्मा जी उप प्रधान, श्री विपिन शर्मा जी सभा मंत्री, श्री प्रेम भारद्वाज जी सभा महामंत्री, श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट रजिस्ट्रार, श्री सुधीर शर्मा जी सभा कोषाध्यक्ष, श्री सुदेश कुमार जी सभा मंत्री, श्री विनोद भारद्वाज जी सभा मंत्री, श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल अधिष्ठाता साहित्य विभाग उपस्थित थे।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी की अध्यक्षता में सभा की कार्यकारिणी की बैठक दिनांक 8/8/2019 दिन वीरवार को सभा कार्यालय में हुई जिसमें भारत सरकार द्वारा अनुच्छेद 370 को जम्मू कश्मीर में समाप्त करने का पूरा पूरा समर्थन किया गया। सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी ने कहा कि अनुच्छेद 370 को समाप्त करने के साथ ही कश्मीर में भी भारत का संविधान लागू होगा। उन्होंने कहा कि अब कश्मीर में केवल तिरंगा लहराया जाएगा। उन्होंने कहा कि सभी भारतीयों को राष्ट्रहित में इस प्रस्ताव का समर्थन करना चाहिये। उन्होंने कहा कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) भारत सरकार द्वारा अनुच्छेद 370 को समाप्त किये जाने के निर्णय का स्वागत और समर्थन करती है और भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी तथा गृहमंत्री श्री अमित शाह का हार्दिक धन्यवाद करती है। एक देश, एक विधान के समर्थन में पूरा देश भारत सरकार के साथ है। इसके साथ ही बैठक में भारत की पूर्व विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया गया और दो मिनट का मौन रख कर दिवंगत आत्मा की सद्गति व आत्मिक शांति के लिये परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की और उन्हें अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। इस बैठक में श्री सरदारी लाल जी सभा वरिष्ठ उप प्रधान, श्री चौधरी ऋषिपाल सिंह जी एडवोकेट उप प्रधान, श्रीमती राजेश शर्मा जी लुधियाना उप प्रधान, श्री प्रेम भारद्वाज जी सभा महामंत्री, श्री सुदेश कुमार जी सभा मंत्री, श्री विपिन शर्मा जी सभा मंत्री, श्री विनोद भारद्वाज जी नवांशहर सभा मंत्री, श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट सभा रजिस्ट्रार, श्री सुधीर शर्मा जी सभा कोषाध्यक्ष, श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल नवांशहर अधिष्ठाता साहित्य विभाग भी उपस्थित थे।

आर्य सी.सै. स्कूल रामपुरा फूल में नशे के खिलाफ जागरूक किया

आर्य सीनियर सैकेंडरी स्कूल रामपुरा फूल में नशा विरोधी सैमीनार एवं रक्तदान कैम्प का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पधारे मान्य अतिथि को पौधा देकर सम्मानित करते हुये प्रबन्ध समिति प्रधान चांद सिंह, स्कूल प्रिंसीपल कुलजीत सिंह एवं अन्य। जबकि चित्र दो में रक्तदान करते हुए अध्यापक।

राज्य सरकार द्वारा शुरू किये गये नशा विरोधी अभियान के तहत आर्य विद्या परिषद पंजाब जालन्धर द्वारा संचालित आर्य सीनियर सैकेंडरी स्कूल रामपुरा फूल में नशा विरोधी सैमीनार तथा रक्तदान कैम्प आयोजित किया गया। कैम्प का उद्घाटन आर्य सी.सै.स्कूल रामपुरा फूल के अध्यक्ष चांद सिंह द्वारा किया गया। इस मौके पर एडवोकेट कर्मजीत सिंह तथा निर्मल सिंह गिल विशेष तौर पर शामिल हुये। शहर की एक समाजसेवी संस्था के सहयोग से आयोजित इस कैम्प में स्थानीय सिविल अस्पताल के ब्लड बैंक की टीम द्वारा 42 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया। कैम्प में अन्य लोगों के साथ आर्य सी.सै.स्कूल के स्टाफ के सदस्यों द्वारा भी पूरे उत्साह से रक्तदान किया गया। इस दौरान रक्तदान करने वाले लोगों को स्कूल की तरफ से सम्मान चिन्ह के साथ पर्यावरण की शुद्धता हेतु पौधे भी दिये गये। आर्य सी.सै.स्कूल के प्रधानाचार्य कुलजीत सिंह ने कैम्प में शामिल सभी मेहमानों का स्वागत करते हुये रक्तदान को अपनी जिन्दगी का हिस्सा बनाने की अपील की।

उन्होंने कहा कि पर्यावरण की समस्या को खत्म करने के लिए हमें वैदिक चिन्तन को आधार बनाना होगा। उन्होंने नशे के दुष्प्रभाव बताते हुये कहा कि लोगों को खासकर विद्यार्थियों को नशे से दूर रहने हेतु प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि आज राष्ट्र का गौरव बढ़े, इसके लिए हमें युवकों को नशामुक्त और चरित्रवान बनाना होगा। युवकों के चरित्र को गौरवमय बनाने के लिए उनके चरित्र में भारतीय संस्कृति का दिव्य प्रकाश होना चाहिए।

आज प्रत्येक राजनैतिक दल नवयुवकों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए हर प्रकार के हथकण्डे अपनाते हैं और आज का युवा मानस दिशा भ्रमित होकर उनके इशारों पर बन्दर की तरह नाच रहा है। आज इन दिग्भ्रमित युवकों को दिशा निर्देशन की जरूरत है। इस दिशा निर्देशन के पीछे राष्ट्र भक्ति, विवेक शीलता, अपनी संस्कृति के प्रति गौरव की भावना का उद्देश्य निहित होना चाहिए। तब तक नशामुक्ति केन्द्रों से नशे को समाप्त नहीं किया जा सकता जब तक उनके अन्दर विवेक की, राष्ट्रभक्ति की भावना स्वयं पैदा न हो। इसलिए राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य है कि इस गम्भीर समस्या पर विचार करके इस का समाधान अवश्य निकालें ताकि राष्ट्र के भविष्य को बर्बाद होने से बचाया जा सके और युवा वर्ग की ऊर्जा को सकारात्मक कार्यों मे लगाया जा सके।

उन्होंने कहा कि वेदों के अनुसार यदि हम वनस्पतियों, औषधियों, वृक्षों तथा जल और वायु का संरक्षण करते हैं तो इस समस्या से छुटकारा पाया जा सकता है। इनका संरक्षण न होने के कारण ही आज प्रदूषण की समस्या फैलती जा रही है, जल दूषित हो रहा है, शुद्ध वायु नहीं मिल रही है जिससे अनेक प्रकार की बीमारियां बढ़ती जा रही हैं। इस मौके पर स्कूल प्रबन्धक कमेटी के सदस्य लाभ सिंह, नीरज सिंगला, नरेश तांगड़ी व स्कूल के शिक्षक उपस्थित थे।

-प्रिंसीपल कुलजीत सिंह

स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की तरफ से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक प्रेम भारद्वाज द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर पंजाब से मुद्रित एवं गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से प्रकाशित। सम्पादक-प्रेम भारद्वाज
पीआरबी एक्ट के तहत प्रकाशित सामग्री के चयन हेतु उत्तरदायी किसी विवाद का न्यायिक क्षेत्र जालन्धर होगा। आर एन आई संख्या 26281/74 E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org